दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

21वीं सदी में आदिवासी समाजः साहित्य लेखन की चुनौतियां एवं संभावनाएं

दिनांकः अप्रैल 19–20, 2018

आयोजक

हिंदी विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक

प्रायोजक

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली

संरक्षक

प्रो. टी वी कट्टीमनी
सम्माननीय कुलपति
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक

संगोष्ठी निदेशक	संयोजक	संगोष्ठी समन्वयक
प्रो. खेमसिंह डहेरिया	डा. प्रवीण कुमार	प्रो. रेनू सिंह
अधिष्ठाता	सहायक प्रोफेसर	अध्यक्ष
मानविकी एवं भाषा संकाय	हिंदी विभाग	हिंदी विभाग

आयोजक समिति	परामर्श समिति
प्रो. तीर्थेश्वर सिंह	प्रो. किशोर गायकवाड
डॉ. आशुतोष कुमार सिंह	प्रो. आलोक श्रोत्रिय
डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह	प्रो. नवीन कुमार शर्मा
डॉ. वीरेन्द्र प्रताप	प्रो. शैलेन्द्र सिंह भदौरिया
डॉ. संतोष कुमार सोनकर	प्रो. एच एन मूर्ति
डॉ. नागेन्द्र कुमार सिंह	प्रो. ए के शुक्ला
डॉ. विनोद सेन	प्रो. पी के सामल
डॉ. समीम अहमद	प्रो. संध्या गिहर
डॉ. प्रमोद कुमार	प्रो. मनुकोण्डा रबिंद्रनाथ
डॉ. चार्ल्स वर्घीज	प्रो. भूमिनाथ त्रिपाठी
डॉ. आनंद सुगंधे	प्रो. कृष्णा सिंह
डॉ. सुहेल अहमद खान	प्रो. अभिलाषा सिंह
डॉ. नारायण पी भोसले	प्रो. अजय बाघ
डॉ. मोहम्मद तौसिफ उर रहमान	प्रो. बसवराज पी डोनुर
डॉ. ज्योति थानवी	प्रो. किशोर अधव
डॉ. हरजीत सिंह	प्रो. वी त्रिपाठी
अभिलाषा अलिस तिर्की	डॉ. विकास कुमार सिंह
शिव शंकर शर्मा	डॉ. रामशृंगार राव

स्थानः इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक (मध्यप्रदेश)

संपर्कः 09424895615 / 09752916192 / 09868721972 / 7024449723 ई–मेलः pravin.igntu16@gmail.com

विश्वविद्यालय के विषय में :

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक की स्थापना भारत के संसद के अधिनियम 2007 के तहत हुई है। यह संपूर्ण देश के लिए शिक्षा का अवसर प्रदान करता है और यह पूरी तरह से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के माध्यम से केन्द्र सरकार द्वारा वित्त पोषित है। विधिवत रूप में विश्वविद्यालय का संचालन जुलाई 2008 में हुआ। विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के माध्यम से आदिवासियों के सपना को साकार करने के लिए प्रतिबद्ध है। वर्तमान में विश्वविद्यालय में संचालित 12 संकायों के अंतर्गत कार्यरत 30 विभागों के माध्यम से आदिवासी कला, साहित्य और समाज को संरक्षित एवं समवर्द्धित करने हेतु विभिन्न पाठ्यक्रमों में इसे सम्मिलित किया गया है। जिसके माध्यम से न सिर्फ आदिवासी समाज के विद्यार्थी अपनी परंपरा को संरक्षित करने हेतु प्रतिबद्ध हुए हैं बल्कि गैर आदिवासी समाज भी उनकी कला और संस्कृति को समझते हुए उसे संरक्षित और सम्वर्द्धित करने का प्रयास कर रहा है।

आदिवासी समाज सांस्कृतिक विरासत, कला और शिल्प के कौशल से परिपूर्ण हैं लेकिन वे अभी भी उच्च शिक्षा, सम्मान और जीवन के अन्य क्षेत्रों में हाशिए पर हैं। अब वैश्वीकरण के कारण दुनिया प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उन्नत करते हुए एक गांव में सिकुड़ गई है, लेकिन आदिवासी, जो वास्तविक अर्थों में भारतीय संस्कृति के संरक्षक हैं, उन्नति के इस दौड़ में बहुत पीछे हैं। भूमंडलीकृत विकास की वर्तमान दुर्दशा से बचाने के लिए विश्वविद्यालय ने निम्नलिखित लक्ष्य को निर्धारित किया है और उसके प्रति प्रतिबद्ध है :

- मुख्यतः भारत के आदिवासी समाज के लिए उच्च शिक्षा, अनुसंधान की सुविधाओं को उपलब्ध करता है।
- आदिवासी कला, परंपरा, संस्कृति, भाषा, औषधीय प्रणाली, पोशाक परिधान, वन आधारित आर्थिक गतिविधियों, वनस्पति, जीव और उन्नति में तथा आदिवासी क्षेत्रों के प्राकृतिक संसाधनों से संबंधित ज्ञान को संबंधित प्रौद्योगिकियों में अनुदेशात्मक और अनुसंधान सुविधाएं प्रदान कर प्रचार–प्रसार करना है।
- विश्वविद्यालय राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों और संगठनों के साथ सम्बद्ध होकर आदिवासी समुदाय की संस्कृति पर अध्ययन और अनुसंधान के लिए संयुक्त रूप से प्रयासरत है।
- आदिवासी केंद्रित विकास मॉडल निर्मित करना, रिपोर्टों और मोनोग्राफों को प्रकाशित करना और आदिवासी संबंधित मुद्दों पर सम्मेलनों और सेमिनार का आयोजन करना और विभिन्न क्षेत्रों में नीतिगत मामलों की जानकारी उपलब्ध कराना भी है।
- आदिवासी समुदाय के सक्षम प्रबंधन, प्रशासन और उनकी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के माध्यम से उसे प्रोत्साहित करने के लिए उचित कदम उठा रहा है।
- शिक्षण और अुनसंधान सुविधाओं द्वारा उनके ज्ञान को उचित रूप में शिक्षण के अन्य शाखाओं के द्वारा प्रसारित किया जाएगा।
- शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया में अंतरा–अनुशासनात्मक अध्ययन और अनुसंधान के संदर्भ में अन्वेषण को प्रोत्साहित कर सम्यक मूल्यांकन तथा अखंड भारत में आदिवासी की सामाजिक, शैक्षणिक एवं आर्थिक स्थिति की समृद्धि एवं कल्याण के लिए विशेष ध्यान देना है।

विभाग के विषय में:

हिंदी विभाग की शुरूआत जुलाई 2008 में स्नातक स्तर की पढ़ाई के साथ हुई थी लेकिन वर्तमान में स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी का कोर्स संचालित किया जा रहा है। विभाग में कुल 7 अध्यापक हैं। बी.ए., एम.ए. और पीएच–डी. में कुल नामांकित विद्यार्थियों की संख्या 109 है।

संचालित पाठ्यक्रम की संरचना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रस्तावित सीबीसीएस (चयन आधारित क्रेडिट सिस्टम) शिक्षण–अधिगम प्रणाली पर केन्द्रित है। जिसमें सीबीसीएस के लक्ष्य को केन्द्रित करते हुए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय के विज़न को समाहित किया गया है। साथ ही यह पाठ्यक्रम साहित्य के अंतरविषयक ज्ञान के व्यापक फलक को अपने कलेवर में समाहित करता है।

प्रस्तुत पाठ्यक्रम साहित्य और समाज के विकास की अवधारणा को रेखांकित करते हुए समाज और साहित्य के समसामयिक विमर्श को भी वैज्ञानिक–वस्तुनिष्ठ दृष्टि से अवलोकन के लिए शिक्षार्थी को तैयार करता है। जिससे शिक्षार्थी न केवल अपने कौशल को संवर्द्धित कर सकते हैं बल्कि अपने अनुशासनात्मक ज्ञान को भी परिष्कृत व परिमार्जित कर सकते हैं और अपने जीवन को सार्थक एवं रोजगारोन्मुख बना सकते हैं।

संगोष्ठी प्रस्तावनाः

आदिवासी साहित्य लेखन पर यह दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन का विचार अनायास नहीं आया, बल्कि 21वीं सदी के लेखन की चुनौतियों ने इस पर विचार करने के लिए बाध्य किया, कि भारतीय सभ्यता की प्राचीन एवं आदि मूल्यों (आदिवासी मूल्यों) के प्रति जो नजरिया तथाकथित मुख्यधारा के समाज के द्वारा अपनाया गया है, उस पर पुनःविचार किया जाना चाहिए।

21वीं सदी आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता और सूचना क्रांति का युग है। इस युग में भी आदिवासी समाज पारंपरिक जीवन यापन में जी रहा है। इसका कारण या तो उनमें इस आधुनिकता के प्रति अभी चेतना नहीं आई है या विकास की योजना उन तक नहीं पहुंची है। जिन कारणों से कई बार न केवल वह अंधविश्वास की ओर कदम बढ़ाता है बल्कि ज्ञान–विज्ञान का विरोध भी करता हुआ दिखाई देता है। यही वजह है कि आदिवासी समाज के साहित्य का अभी तक व्यापक सृजन का फलक नहीं बढ़ा है और न ही उसे साहित्य और अकादमिक जगत में जितनी जगह मिलनी चाहिए, उतनी मिली है। जिसका एक कारण आदिवासी बोलियों में हो रही रचनाओं से समाज की अभिज्ञता है तो दूसरा कारण आदिवासी लेखन को समाज के द्वारा आत्मसात नहीं करना है। जबकि आदिवासी साहित्य में कला और सौन्दर्य की विशद् गंभीरता ही नहीं है बल्कि जीवन मूल्यों के बारीक से बारीक स्वरूप को भी देखा जा सकता है। इस संगोष्ठी का उद्देश्य यह है कि आदिवासी समाज के इस विशद् साहित्य को, उनकी कलाओं और उसके मूल्यों को साहित्य लेखन के माध्यम से उनकी समस्याओं और चुनौतियों की परख करते हुए कला–साहित्य लेखन के प्रति आदिवासियों की चेतना और उसके सौन्दर्यबोध को समाज के व्यापक फलक पर लाने का प्रयास।

बिना सचेतन और ज्ञान के जीवन को व्यवस्थित रूप से न तो जीया जा सकता है और न ही समाज के विकास में योगदान किया जा सकता है। इस संदर्भ में समाज के विकास में आदिवासी समाज की कला और उनके मूल्यों को नकारा नहीं जा सकता है लेकिन सवाल उठता है कि आदिवासी कला के सृजन को अभी तक वह महत्व क्यों नहीं मिला जो मिलना चाहिए? क्या आदिवासी समाज का प्रकृतिमय जीवन मूल्य भारतीय समाज की समृद्धि का आधार नहीं? निश्चित तौर पर इससे इनकार नहीं किया जा सकता है कि आदिवासी समाज की कलाओं के मूल्यों से भारतीय कला–साहित्य न केवल अछूता है बल्कि उसे नकारा भी गया है। इस संगोष्ठी का महत्व इस बात में है कि आदिवासी कला मूल्यों से भारतीय कला–साहित्य के अंतःसंबंधों और उसकी समृद्धि में आदिवासी कला–साहित्य की भूमिका को रेखांकित करना।

साहित्य और विमर्श का संबंध इतिहास में निरंतर बना रहा है। दोनों के वैचारिक स्वरूप में पूरक का रिश्ता रहा है। आदिवासी साहित्य और विमर्श भी मूलतः ऐसा ही है। यह साहित्य और विमर्श भी मूलतः आदिवासी जीवनमूल्य–पद्धति व उसकी साहित्यिक अभिव्यक्ति पर आधारित है। यह 'पद्धति' और 'अभिव्यक्ति' दोनों आदिवासी समाज के जीवन संघर्ष, उनके अधिकार, विकास, विकास की पद्धति, उसकी 'सभ्यता–संस्कृति' के संरक्षण के सवाल, उनकी भाषा के संरक्षण का सवाल और उसे रोजगारोन्मुख बनाना, विस्थापन और उनकी चेतना की निर्मिति आदि से जुड़ी हुई है। इस आलोक में आदिवासी साहित्य लेखन को समझने की जरूरत है।

साहित्य और विमर्श का दर्शन एवं विचारधारा से भी गहरा संबंध है। दर्शन और विचारधारा ही विमर्श एवं साहित्य को स्थाईत्व प्रदान करती है। इसकी जड़ें किसी भी समुदाय या समाज की सभ्यता–संस्कृति से संपृक्त होती रहती हैं। सभ्यता–संस्कृति से अलग होते ही साहित्य और विमर्श परिवर्तनकामी नहीं रह जाता है। वह सुधारवादी मानस में बदल जाता है जो कि किसी भी समाज के विकास में बहुत सहायक नहीं होता है। कई बार तो अवरूद्धता का भी शिकार हो जाता है। इस स्थिति में उस समाज का विकास जड़ता, अराजकता, पारंपरिक मान्यताओं, अंधविश्वासों, कर्मकांडों आदि में तब्दील होने लगता है या हो जाता है। आदिवासी समाज की जीवन पद्धति और उसके विकास की प्रक्रिया के साथ कुछ ऐसा ही हुआ है और हो भी रहा है। इस प्रस्थिति में आदिवासी चेतना, चिंतन एवं दर्शन निश्चित ही इसका विरोध करता है और विकास की इस प्रक्रिया को अपने के लिए घातक बताता है क्योंकि उसे लगता है कि उसे अपनी संस्कृति से काट कर अलग किया जा रहा है। उसकी संपदा को खत्म किया जा रहा है। उसे अधिकारविहीन बनाया जा रहा है। ऐसा सवाल उठना भी लाजमी है क्योंकि वर्तमान भूमंडलीकृत विकास प्रक्रिया और आंदोलन में ऐसा ही कुछ देखने को मिलता है। इसका मतलब यह कतई नहीं है कि आदिवासी विमर्श और आदिवासी आंदोलन या फिर सरकार की विकास प्रक्रिया के द्वारा आदिवासी समाज के विकास के लिए कुछ नहीं किया जा रहा है। तब सवाल उठता है कि आदिवासी समाज का विकास कैसे किया जाए? उसे विकास की प्रक्रिया से कैसे जोड़ा जाए? उसके जीवन पद्धति को कैसे समझा और विकसित किया जाए? उनकी कला को कैसे समझा जाए? उसके वैचारिक दर्शन को कैसे समझा और चिंतन किया जाए? उनके जीवन मूल्यों को कैसे परखा जाए? आदि। इन्हीं सवालों के साथ यहां आदिवासी कला–साहित्य के माध्यम से आदिवासी चेतना, विमर्श और आदिवासी संघर्ष को समझने का प्रयास किया जाएगा। उम्मीद है कि इस प्रक्रिया और संदर्भ में कुछ नए चिंतन और तथ्यों की खोज संभव है।

मानव की सभ्यता–संस्कृति के साथ ही कला–साहित्य का उत्स हुआ है और उसके विकास की प्रक्रिया के समानुरूप ही उसका विकास भी हुआ है। संभवतः और तथ्यतः संसार की सभी कलाओं का उत्स मानव का मानस और उसकी भंगिमाओं का चित्रण है। तत्पश्चात उस पर चिंतन और मनन से उसकी स्पष्टता का सवाल उठा है। उसे चिंतन और दर्शन से परिष्कृत व परिमार्जित किया गया है। वह मौखिक परंपरा से लिखित परंपरा की ओर बढ़ा है। इसी संदर्भ और परिप्रेक्ष्य में आदिवासी समाज और उसकी कलाओं का निरीक्षण–परीक्षण किया जाए तो उचित होगा। आदिवासी साहित्य मौखिक परंपरा में अपनी मूल प्रकृति में बहुत ही व्यापक दर्शन को संचित किए हुए है। इस दर्शन को समझना गैर आदिवासी समाज के लिए बहुत ही कठिन है। कई बार तो वह नामुमकिन भी हो सकता है क्योंकि गैर आदिवासी समाज न तो आदिवासी भाषा, संस्कृति, मिथक, प्रतीक आदि से परिचित है और न ही उनकी कलाओं में व्याप्त जीवन मूल्यों को समझने में पूर्णतः सक्षम है तथा उस पर गंभीरता से चिंतन करता है। उसे अपनी विचारधारा और सुविधाओं के अनुकूल जो दिख जाता है उसी को लेकर वह अपनी वैचारिकी से जोड़ आदिवासी दर्शन, संस्कृति और साहित्य को समझने–समझाने का दावा करता है जो कि अनुचित भी हो सकता है। यही वजह है कि कुछ आदिवासी विद्वानों ने स्वानुभूति का सवाल उठाते हुए वर्तमान आदिवासी साहित्य को आदिवासी दर्शन से विहीन बताया है।

आदिवासी समाज मानवीय समाज का सबसे आरंभिक समाज है। मानव की पहुंच चांद और मंगल तक हो गई है। लेकिन आज भी आदिवासी समाज अपनी प्रारंभिक अवस्था में है। आदिवासी चेतना लगातार विविध क्षेत्रों में अपना हस्तक्षेप शुरू किया है। इस हस्तक्षेप में उनके भूगोल और इतिहास के साथ उसकी संस्कृति, सांस्कृतिक सौन्दर्य भारतीय समाज की व्यवस्था भी समाहित है। इस संगोष्ठी का लक्ष्य आदिवासी समाज में हो रहे भाषिक–सांस्कृतिक परिवर्तन की समझ पैदा करते हुए भाषा और साहित्य सृजन में नए आयाम को जोड़ना है। इसके साथ ही आदिवासी साहित्य के सौन्दर्यशास्त्र की निर्मिति की परख हो सकती है।

आगामी अप्रैल 19–20, 2018 को हिंदी विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय के तत्वाधान में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का मकसद निम्नवत है:

1. आदिवासी लेखन के इतिहास को समझना
2. आदिवासी कला की परंपरा को समझना
3. आदिवासी कला में निहित जीवन मूल्यों के वैश्विक पटल को जानना
4. आदिवासी भाषा एवं संस्कृति की चुनौतियों की पहचान
5. आदिवासी साहित्यदर्शन और सौन्दर्यबोध को समझना
6. आदिवासी साहित्य और अन्य परिवर्तनकामी साहित्य के अंतःसंबंध को समझ सकेंगे।

इस महत्ती कार्य में आप सभी प्रबुद्धजनों की सक्रिय बौद्धिक सहभागिता अपेक्षित है।

संगोष्ठी के प्रमुख विचारणीय बिन्दुएं:

- आदिवासी कला की अवधारणाः विविध आयाम
- आदिवासी कला–साहित्य और भारतीय समाज का अंतः संबंध
- भूमंडलीयकृत विकास की अवधारणा और आदिवासी समाज का लेखन
- आदिवासी कला सृजनः विविध परिप्रेक्ष्य
- आदिवासी लेखन का इतिहास
- आदिवासी कला का इतिहास
- आदिवासी साहित्य का दर्शन
- आदिवासी साहित्य की अवधारणा
- आदिवासी साहित्य की वैचारिकी
- आदिवासी साहित्य और नए प्रश्न
- आदिवासी संस्कृति : आशय एवं विशिष्टता
- आदिवासी संस्कृति की वैचारिकी
- आदिवासी संस्कृतिः संकट एवं संरक्षण का सवाल
- आदिवासी समाज में भाषिक–सांस्कृतिक परिवर्तन
- भूमंडलीकृत विकास और आदिवासी समाज

- आदिवासी साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र
- आदिवासी समाज की सामाजिक संरचना
- आदिवासी साहित्य की आलोचना
- आदिवासी स्त्री लेखन :चुनौतियां एंव संभावनाएं
- आदिवासी कला में निहित जीवन मूल्य
- आदिवासी इतिहास दर्शन
- आदिवासी साहित्य का समाजशास्त्र
- आदिवासी सौन्दर्यबोध
- आदिवासी साहित्य का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन
- आदिवासी समाज की सांस्कृतिक अवधारणाएं
- आदिवासी समाजः अस्तित्व एंव अस्मिता का सवाल
- आदिवासी समाज :विकास एंव विस्थापन की समस्याएं
- वैश्वीकरण के युग में आदिवासी समाज की रचनात्मक अभिव्यक्ति
- वैश्वीकरण के युग में आदिवासी समाज की भाषाः शिक्षण–अधिगम एवं रोजगार की समस्याएं
- आदिवासी कविता का इतिहास
- आदिवासी कहानी लेखन की परंपरा
- आदिवासी उपन्यास :परंपरा और स्वरूप
- आदिवासी आत्मकथाओं का लेखनः चुनौतियां एवं संभावनाएं
- आदिवासी समाजः सांस्कृतिक रूपांतरण का सवाल
- आदिवासी साहित्यः मिथक और यथार्थ
- दलित और आदिवासी साहित्य का अंतःसंबंध
- स्त्री विमर्श और आदिवासी स्त्री लेखन
- हाशिए का समाज और आदिवासी लेखन

मौसम और दर्शनीय स्थल :

अमरकंटक अनुपपुर मध्यप्रदेश के अनुपपुर जिले में स्थित एक प्राचीन एंव पौराणिक स्थल है। प्राचीन ऋषियों की तपोभूमि के नाम से प्रसिद्ध है। यह नर्मदा, सोन और जोहिला जैसे नदियों का उद्‌गम स्थल है। यहां कई प्राकृतिक झरने हैं। प्राकृतिक और आयुर्वेदिक औषधीय दृष्टि से यह जगह विश्वविख्यात है। यहां का प्राकृतिक सौन्दर्य अद्‌भुत और मनोरम है। ग्रीष्म ऋतु में भी अधिकतम तापमान 37 डिग्री सेल्सियम है। यहां की ऊंची चोटियां शाल, चीड़ और देवदार के वनों से अच्छादित है जो न सिर्फ प्राकृतिक सौन्दर्य को बढ़ाती है बल्कि स्वच्छ एवं प्रदूषणरहित वातावरण भी तैयार करती है।

शोधपत्र प्रस्तुत करने हेतु दिशा–निर्देशः

1. शोधसार हिंदी भाषा में अधिकतम 500 शब्दों में होना चाहिए।
2. Kruti Dev 010, kruti Dev 16 में टाईप किया होना चाहिए।
3. शोधसार या पूर्ण शोधपत्र pravin.igntu16@gmail.com पर निर्धारित तिथि के अंदर ईमेल कर दें।
4. शोधपत्र मौलिक और अप्रकाशित होना चाहिए।
5. संगोष्ठी से संबंधित अन्य सूचनाएं प्रतिभागियों के व्यक्तिगत ईमेल पर अलग से भेजी जाएगी।
6. उत्कृष्ट शोधपत्र का ही वाचन और प्रकाशन किया जाएगा।
7. आवासीय सुविधा चाहिए या नहीं।
8. संगोष्ठी संबंधित किसी भी समस्या के लिए pravin.igntu16@gmail.com पर या मोबाइल न. 09424895615 / 09752916192 / 09868721972 / 7024449723 पर संपर्क कर सकते हैं।

महत्वपूर्ण तिथिः

1	शोधसार भेजने की अंतिम तिथि	25 मार्च 2018
2	पूर्ण शोधपत्र भेजने की अंतिम तिथि	04 अप्रैल 2018
3	पंजीकरण की अंतिम तिथि	05 अप्रैल 2018
4	संगोष्ठी तिथि	19–20 अप्रैल 2018

प्रकाशन योजनाः

उत्कृष्ट शोधपत्र का प्रकाशन समिति के सिफारिश पर प्रतिष्ठित प्रकाशन से किया जाएगा।

टी.ए. / डी.ए. एवं आवासीय सुविधाएंः

बाहर से आने वाले सभी प्रतिभागियों के अनुरोध पर ही संगोष्ठी संयोजक द्वारा विश्वविद्यालय परिसर में आवास–व्यवस्था की सुविधाएं उपलब्ध करायी जाएगी। प्रतिभागियों के लिए यात्रा भत्ता और मानदेय की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं है। सिर्फ भोजन एवं यातायात की व्यवस्था है।

पंजीयन शुल्कः

प्राध्यापकों के लिए – 1000 / –
शोधार्थी / विद्यार्थी के लिए – 700 / –(आवास सुविधा सहित)
शोधार्थी / विद्यार्थी के लिए – 500 / –(बिना आवास सुविधा)

पंजीयन कराने हेतु विवरणः (ऑन लाइन या डिमांड ड्राफ्ट के द्वारा सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया में कर सकते हैं)

1. खाताधारी का नाम : Convener, National Seminar Hindi, IGNTU, Amarkantak
2. खाता संख्या : 3668440725
3. IFSC कोडः CBIN0284695
4. MICR कोडः 484016137

विश्वविद्यालय तक पहुंचने का साधनः

1. सड़क मार्ग (बस)– जबलपुर, बिलासपुर, इलाहाबाद, रीवा से सीधा अमरकंटक तक की बस सेवा है।
2. रेल मार्ग– रेलवे स्टेशन– पेड्रा रोड, स्टेशन कोड– PND (कटनी–विलासपुर रेलमार्ग) से विश्वविद्यालय 25 किमी की दूरी पर स्थित है।
3. हवाई मार्ग– नजदीकी का हवाई अड्डा – जबलपुर (250 किमी), रायपुर (230 किमी)

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

21वीं सदी में आदिवासी समाजः साहित्य लेखन की चुनौतियां एवं संभावनाएं

दिनांकः अप्रैल 19–20, 2018

हिंदी विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक

पंजीयन –प्रपत्र

नामः डॉ./प्रो./श्री/श्रीमती .....

पदनामः ..... लिंगः .....

संस्था का नामः .....

पताः .....

.....

दूरभाष न. :..... मोबाइलः .....

ई–मेलः .....

क्या आप राष्ट्रीय संगोष्ठी में आलेख पढेंगे? हाँ/ नहींः .....

क्या आपको आवास की आवश्यकता है? हाँ/नहींः .....

भुगतान की कुल राशि(रूपये में): .....

भुगतान का माध्यम(डिमांड ड्राफ्ट/ऑन लाइन): .....

रसीद क्रमांक..... ड्राफ्ट संख्या.....

बैंक का नाम.....दिनांकः .....

.....

हस्ताक्षर

भरा हुआ पंजीयन प्रपत्र सशुल्क पंजीयनकर्ता के पास जमा करा दें या pravin.igntu16@gmail.com पर ई–मेल कर दें। यदि आवश्यकता हो तो पंजीयन फॉर्म की छायाप्रति का उपयोग पंजीयन हेतु किया जा सकता है। प्रतिभागीगण संगोष्ठी में पंजीयन के लिए पंजीयन प्रपत्र वेबसाइट **www.igntu.ac.in** से भी डाउनलोड कर सकते हैं।